सबरंग

सबरंग

धर्मपाल

जगतराम एण्ड सन्स
गांधीनगर, दिल्ली-110031

अर्पित

कोई उसे राम कहता है, कोई रहीम। कोई कृष्ण का नाम देता है, कोई करीम का। कोई दुर्गा के रूप में उसकी आराधना करता है। कोई भोला-नाथ कहकर उसे पुकारता है। मंज़िल एक है, चाहे रास्ते अनेक हों।

'सबरंग' श्रद्धा के फूलों का एक गुलदस्ता है। इसमें मैंने सभी प्रकार के भक्तजनों के भावों को प्रकट करने का प्रयास किया है। प्रेरणा का स्रोत मेरे परम आदरणीय महातपस्वी सत्गुरु श्री शिवस्वरूप जी आतमा कुराली वाले हैं। यह पुस्तिका मैं उन्हीं के चरणकमलों में अर्पित करता हूं।

—**धर्मपाल**

1

दीदार[1]-ए-खुदा पाने के लिए।
खुदी को मिटाना पड़ता है ।।
सर ऊंचा उठाने की खातिर।
उस दर पे झुकाना पड़ता है ।।

रख उस पे भरोसा ऐ हमदम[2]।
तू जाम-ए-इबादत[3] पीता जा ।।
हर चोटी सर[4] करने के लिए।
अकसर गिर जाना पड़ता है ।।

हो जाए निगाहे कर्म[5] उसकी।
दुश्वार[6] गुज़र आसान बने ।।
हर मंज़िल को पाने के लिए।
उस राह पे जाना पड़ता है ।।

हर सू[7] उसका ही जलवा है।
तुझसे ही दूरी नहीं मिटती ।।
शमा की कुर्बत[8] की खातिर।
हस्ती को मिटाना पड़ता है ।।

---

1. दर्शन 2. साथी 3. नाम का प्याला 4. विजय
5. मेहरबानी 6. मुश्किल 7. दिशा 8. नज़दीकपन

हर शाह गदा यकसां[1] हैं यहां ।
तूने क्यों भेद बनाया है ।।
हर राज़ को पा जाने के लिए ।
दूई को मिटाना पड़ता है ।।

धन-दौलत के ढेरों से कभी ।
तसकीन[2] नहीं मिलती हरगिज़ ।।
सकूने[3] कलब पाने के लिए ।
तमा को मिटाना पड़ता है ।।

जो चाहे सकून मुयस्सर हो ।
साहिल की तमन्ना क्या करता ।।
यह तुन्दीये[4]-तूफां पल भर हैं ।
इसको मिट जाना पड़ता है ।।

---

1. बराबर 2. आराम (शान्ति) 3. मन की शान्ति 4. तेजी

2

दर को तुम्हारे मय्या ठिकाना बना लिया है ।
पाके तुम्हारे दर्शन सब कुछ ही पा लिया है ।।
भाता नहीं है मुझको आलम यह चंद रोज़ा ।
आलम से दिल हटा कर तुझसे लगा लिया है ।।
मां प्यार का यह आलम तारी[1] रहे हमेशा ।
बस नाम से तुम्हारे मन को सजा लिया है ।।
तूने दिया था माता शीशे-सा पाक[2] दामन ।
छल और कपट से उसको मैला बना लिया है ।।
जाऊं कहां मैं मय्या, मेरा कहां सहारा ।
दुनिया भुलाके तुझको मन में बसा लिया है ।।
बख्शे गुनाह जो भी तेरी शरण में आया ।
दर तेरा मय्या सबने अब आज़मा लिया है ।।

---

1. छाया 2. पवित्र

3

चरणों में सर झुका दे, मां ऊंचा उठा देगी।
तेरी ज़र्रा[1]-सी हस्ती, वह खुरशीद[2] बना देगी।।

है ऊंचे से ऊंचा दरबार मेरी मां का।
है झूले सदा झंडा गुलनार मेरी मां का।।
करती है गंगा माता सत्कार मेरी मां का।
गर याद करे उसको, वह ताज बना लेगी।।
चरणों में……

हाथों में सोहे चूड़ा, है लाल मेरी मां के।
है सर पे चुनरिया गुलाल मेरी मां के।।
चेहरे से झलकता है जलाल मेरी मां के।
लग जा तू चरणों से वह कष्ट मिटा देगी।।
चरणों में……

दाती है मेरी माता, उसके भरे भंडारे।
जो बन्दगी में आये, मिल जायें सब सहारे।।
मझधार में हो नैया, लग जायेगी किनारे।
पतझड़-सा तेरा जीवन, वह बहार बना देगी।।
चरणों में……

---

1. कण 2. सूर्य

4

वह सबसे प्रीत निभाता है,
तू एक को भी अपना न सका।
फंस के माया के बंधन में,
क्यों हरि नाम गुण गा न सका।

वह बांटता है, तू जोड़ता है,
लालच में सर क्यों फोड़ता है।
तोड़ा क्यों उससे नाता है,
क्यों अपना उसे बना न सका।
वह......

जो प्रभु नाम के गुण गाये,
तेरा दामन प्यार से भर जाये।
हट जाये माया का पर्दा,
क्यों इस पर्दे को हटा न सका।
वह......

क्यों दर-दर शीश झुकाता है,
दामन अपना फैलाता है।
औरों के जो टुकड़े खाता,
पल भर भी वह सुख पा न सका।
वह......

5

सत्यं शिवं धी मही ।
हर चीज़ तुझसे कायम ।
बिन तेरे यहां कुछ भी नहीं ।।

ज़र्रे-ज़र्रे में तू है समाया ।
हर शै[1] पे तेरा रंग छाया ।।
है किधर तेरा जलवा नहीं ।
सत्यं शिवं……

फिरता मानव है पग-पग भटकता ।
मोह माया के फंदे में फंसता ।।
तोड़ता क्यों ये बंधन नहीं ।
सत्यं शिवं……

जप ले तू ऐ बशर[2] नाम उसका ।
है चारों तरफ रूप जिसका ।।
कुछ तेरा इसमें घटता नहीं ।
सत्यं शिवं……

वह सबके है कष्ट हरता ।
सभी फिक्र गम नष्ट करता ।।
क्यों वह दामन पकड़ता नहीं ।
सत्यं शिवं……

---

1. वस्तु 2. मनुष्य

6

जय-जय-जय-जय शंकरम् ।
आये हैं हम तेरी शरणम् ।।

बुद्धि के परपंच मिटा दो ।
ज्ञान ज्योति हृदय में जगा दो ।।
मुक्ति की हमें राह दिखा दो ।
जन्म मरण से छुट जायें हम ।।
जय……

तेरे नाम का पीकर जाम ।
भक्ति करें तेरी निष्काम ।।
मिटे मोह माया और काम ।
लगा लो तुम अपने चरणम् ।।
जय……

कोई दुःख से रो न पाये ।
नयनों से अश्रु न बहाये ।।
सारा रोग सोग मिट जाये ।
कह सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ।।
जय……

7

रात जगाई है मां के दीवानों ने ।
रंग बिखेर दिया नाम के पैमानों ने ।।

उसके दर पे जो सर झुका देवे ।
अपनी हस्ती को गर मिटा देवे ।।
रज़ा[1] में उसकी रज़ा मिला देवे ।
मिट के पाया शमा को परवानों ने ।।
रात......

उसके नूर से रोशन है आलम सारा ।
बिना किस्मत नहीं मिलता मगर कोई सहारा ।।
वह डूबती नैया को दिखाती है किनारा ।
उसके कर्म से फूल खिलाये वीरानों ने ।।
रात......

मांग चाहे न कुछ खुद ही दे देती है ।
खाली हीरों से दामन वह भर देती है ।।
तेरे कष्टों को पल भर में हर लेती है ।
भेद पाया न खुदगरज इन्सानों ने ।।
रात...

1. इच्छा

धन-दौलत यहां पर ही रह जायेंगे ।
मान अभिमान पल भर में बह जायेंगे ।।
शानो-शौकत न कुछ तेरे काम आयेंगे ।
इनको ठुकराया है मां के मस्तानों ने ।।
रात……

8

मेरी रानी मां, मेरी भवानी मां।
तेरे दर्श को तरसें मेरी अंखियां ।।

मैं पापों का भरा घड़ा हूं।
तेरे दर पे आन पड़ा हूं ।।
काट के मैल मेरे हृदय की।
प्यार से भर दो झोली मां ।।
मेरी रानी……

मिल जाये मुझे जो तेरा सहारा।
छूटे मंझदार मिल जाये किनारा ।।
तोड़ के माया के सब बंधन।
चरण लगा लो दाती मां ।।
मेरी रानी……

जो भी तेरी शरण में आये।
और श्रद्धा से शीश निवाये ।।
होवें पूरी सब उसकी मुरादें।
जाये कोई न ही खाली मां ।।
मेरी रानी……

9

ऊंचे स्वर से बोल रे मनवा, ऊं नमः शिवाय।
धुल जाए मन की मैल सजनवा, ऊं नमः शिवाय।।

क्यों माया के पीछे हुआ दिवाना।
क्यों बिसराया है नाम खज़ाना।।
राम नाम रस जो तू पीवे।
फिर कछु और न भाये।।
ऊंचे……

धन झूठा यह यौवन झूठा।
जग का सुनहरा बन्धन झूठा।।
जोड़-जोड़ क्या भरे तिजोरी।
यह कुछ काम न आये।।
ऊंचे……

जो तू उसका दामन पकड़े।
मिट जाएं सब तेरे दुखड़े।।
जपते-जपते नाम प्रभु का।
उसी का अंग बन जाये।।
ऊंचे……

10

राम भजन छोड़ा क्यों प्राणी ।
राम बिना कुछ मर्म न जानी ।।

बार-बार दुनिया में आया ।
खाया पीया वक्त गंवाया ।।
मुख पे हरि का नाम न लाया ।
यूंही बीत गई ज़िन्दगानी ।।
राम भजन······

सत्य धर्म का हाथ न पकड़ा ।
मोह माया बंधन में जकड़ा ।।
सांझ सवेरे घर का रगड़ा ।
गाता अपनी राम कहानी ।।
राम भजन······

जिसने प्रभु का नाम पुकारा ।
उसने पाया अमर सहारा ।।
जीवनमुक्त हुआ वह प्यारा ।
तज उसको न कर नादानी ।।
राम भजन······

11

मन राम से प्रीत लगाता चल।
विषयों को दूर हटाता चल॥

पावन गंगा सब मैल धोये।
निर्मलता को पर न खोए॥
मन सरिता को गंग रूप दे।
माया मैल मिटाता चल॥
मन राम······

काम क्रोध भी छल न पावे।
मोह और माया भी मिट जावे॥
लोभ तुम्हारे निकट न आवे।
इनसे बन्ध छुड़ाता चल॥
मन राम······

12

मैं राम नहीं, घनश्याम नहीं,
मैं तुझ में हूं, मैं सब में हूं ।

हर जगह पे मेरा डेरा है,
मंदिर मस्जिद न बसेरा है,
हरसू ही मेरी कहानी है,
किस कण पे मेरा नाम नहीं…

यह चाह नहीं तू फूल चढ़ा,
मुझ आगे अपना शीश निवा,
तू दीन दुखी की सेवा कर,
पीता क्यों अमृत जाम नहीं…

हर कर्म तेरा मैं जानता हूं,
तेरे मन को भी पहचानता हूं,
तू क्योंकर पाप छुपाएगा,
घट भीतर मेरा धाम नहीं…

निर्धन में मैं ही रहता हूं,
धनवान के नखरे सहता हूं,
न नफरत की ज्वाला में जल,
इसका अच्छा अंजाम[1] नहीं…

1. परिणाम

13

सिमर ले नाम तू· उसका।
है जलवा हर तरफ जिसका ।।

अल्लाह है या ईश्वर है।
महेश्वर है या सत-गुर है ।।
कोई भी नाम दो उसको।
मेहरबां है वही सबका ।।
सिमर……

वही कण-कण में बोले है।
तेरा सच्च झूठ तोले है ।।
भुलावेगा उसे कब तक ।
तेरा हर कण बना उसका ।।
सिमर……

कदर उसकी तू क्या जाने।
उसे भूला है दीवाने ।।
चढ़ा ले नाम का प्याला।
मिले दीदार तब उसका ।।
सिमर……

14

जय शिव शंकर जै जग दाता,
तीन लोक के प्राण त्राता।

डग मग डोले मन की नैया,
बन जाओ तुम इसके खवैया,
हर प्राणी की बिगड़ी बनाता,
जय शिव शंकर……

भस्मासुर घोर तप कीना,
भोले भाव अमर वर दीना,
तभी तो है भोला कहलाता,
जय शिव शंकर……

जो भी तेरी शरण में आये,
कष्ट मिटें सब परम सुख पाये,
कोई खाली हाथ न जाता,
जय शिव शंकर……

पूजा की मैं रीति न जानूं,
नाम जपन में ही सुख मानूं,
मैं हूं मूढ़ ज्ञान दो दाता,
जय शिव शंकर……

15

दर्शन को तेरे आये मैया तेरे पुजारी।
चरणों में मां लगा ले, है कामना हमारी॥
ओ मां········ओ भोली मां············

पौड़ी-पौड़ी चढ़ते जायें।
तेरी वन्दना करते जायें॥
नैनां लगे भवन पे तेरे।
दर्श दिखा दो प्यारी मां॥
ओ मां······

जो भी लेवे तेरा सहारा।
पावे न वह दूर किनारा॥
तर जाये वह भवसागर से।
जिन पर हो मां कृपा तुम्हारी॥
ओ मां······

श्रद्धा के हम फूल हैं लाये।
रूप तुम्हारा दिल को भाये॥
पाके तेरा प्यार ओ मैया।
रहे न कोई भिखारी॥
ओ मां······

16

मन राम का नाम पुकारे जा।
बिगड़ी तकदीर संवारे जा॥
अब भोर भई तू सोवत है।
क्यों हीरा जीवन खोवत है॥
पापों का बोझ उतारे जा।
मन……

जो राम का नाम भुलायेगा।
वह चैन कभी न पाएगा॥
ममता और मोह बिसारे जा।
मन……

माया तो राम भुलाती है।
विषयों में जान फंसाती है॥
माया का चोला उतारे जा।
मन……

17

कर ले प्राणी हरि का सिमरण ।
चार दिवस यह तेरा जीवन ।।

गया समय फिर हाथ न आये ।
मानस जन्म वृथा ही जाये ।।

माया जाल फंसा जन्मों से ।
तोड़ दे पगले अब ये बन्धन ।।
कर ले……

धन दौलत है सपन सुहाने ।
हरि नाम महिमा न जाने ।।

नाम खज़ाना जो तू पा ले ।
टूटे सपनों का जग बंधन ।।
कर ले……

कण-कण में है राम बसेरा ।
भटके मूर्ख क्यों मन तेरा ।।

मन भटकन कैसे जायेगी ।
बिना किये प्रभु नाम का चिन्तन ।।
कर ले……

रूप जगत के हैं जो भाये ।
वे केवल हैं ढलते साये ।।

अन्त समय कुछ साथ न देता ।
बिसराया क्यों राम नाम धन ।।
कर ले……

18

रे मन जप ले उसका नाम।
तज के मोह माया और काम ॥

जो तेरे तन-मन में बसता।
चंदा में तारों में हंसता ॥
कण-कण में है वास उसी का।
अविनाशी अभिराम······

जो माटी से फूल खिलाये।
जो नभ से अमृत बरसाए ॥
दीन दुखी के दर्द बंटाए।
सबका दाता राम······

तूफानों में बने किनारा।
भगतों की आंखों का तारा ॥
जिसका दु:ख में मिले सहारा।
संवरे बिगड़े काम······

मन दर्पण की धूल मिटा ले।
राम नाम की महिमा गा ले ॥
उसको अपने भीतर पा ले।
पी मस्ती का जाम······

हर दुख हर विपदा को टारे।
माया के सब कष्ट निवारे ॥
मन में स्वर्णिम जोत उजारे।
दीन बन्धु घनश्याम······

19

राम जपे सुख पाये।
पाप तजे दुख जाये॥

माया है इक गहरी खाई।
इसके लिए क्यों सुध बिसराई॥
चिन्तन कर ले दो पल भाई।
राम नाम सब रोग मिटाये॥
राम जपे……

झूठा जग झूठे संसारी।
दुख का कारण माया, नारी॥
सच्ची केवल नाम खुमारी।
चढ़े यदि तो उतर न पाये॥
राम जपे……

सच्चे मन से उसे पुकारो।
बैठ अकेले नाम उचारो॥
मन दर्पण में उसे उतारो।
माया का धोखा मिट जाये॥
राम जपे……

20

नाम की खेती न्यारी रे।
नाम में अजब खुमारी रे॥

माया ठगनी नाच नचाये।
मन दर्पण पे मैल चढ़ाये॥
राम नाम है ऐसो साबुन।
मैल काट दे सारी रे॥
नाम की······

माया में क्यों हरि को खोया।
पाप बीज के दुखड़े रोया॥
गर अन्दर का राम पछाने।
हो निर्मल काया सारी रे॥
नाम की······

छोड़ नाम का अमर खज़ाना।
परछाईं पे हुआ दीवाना॥
जन्म-जन्म भ्रमों में डूबा।
खो दी उमरिया प्यारी रे॥
नाम की······

21

राम नाम अमृत की धारा।
राम नाम जीवन आधारा।।

नाम ही मन का रोग मिटाये।
मैला मन कंचन हो जाए।।

दीन दुखी को राह दिखाये।
तू भी ले ले उसका सहारा।।
राम नाम......

अंधकार में बनता बाती।
तूफानों में वह ही साथी।।

तर जाये वह भव सागर से।
जिसने उसका नाम पुकारा।।
राम नाम......

देख के दर्पण क्या इतराये।
मन की धूली बढ़ती जाये।।

राम नाम सागर जो डूबा।
उसको निश्चित मिला किनारा।।
राम नाम......

तेरा दुख में वही सहाई।
काहे उसकी सुध बिसराई।।

नाम बिना तरना मुश्किल है।
टूटी किश्ती दूर किनारा।।
राम नाम......

बिना नाम के सहारे।
कश्ती लगे न किनारे॥

प्रभु नाम जप ले।
हरि नाम जप ले॥
जिससे प्रीत लगाई।
वह माटी है भाई॥
नेक करे जो कमाई।
दुख मिट जायें सारे॥
बन्दे नाम जप ले······

माया अपने वाण चलाए।
काहे तू धोखा खा जाए॥
मिलेगा कहां ठिकाना।
तज कर हरि के द्वारे॥
बन्दे नाम जप ले······

बिन नाम हरि के प्राणी।
है अधूरी तेरी कहानी॥
यह अवसर खो न देना।
शीश झुके प्रभु द्वारे॥
बन्दे नाम जप ले······

मन चंचल, लहराता सागर।
कर ले ज्ञान की लौ उजागर॥
राम नाम है भ्रमनाशक।
भ्रम के रोग मिटा रे॥
बन्दे नाम जप ले······

23

जप ले दो पल नाम हरि का, जन्म मरण छुट जायेगा।
माया पीछे हुआ दीवाना, बंधन छूट न पायेगा।।

उड़ जाये कब प्राण पखेरू, किसने पगले जाना है।
माटी का तनवा यह आखिर माटी में मिल जायेगा।।

कोठी बंगला मोटर गाड़ी, दो दिन के ही साथी हैं।
राम नाम मणि धारण कर ले, समय हाथ नहीं आयेगा।।

धन दौलत और रंग रूप सब, दो पल के बाराती हैं।
इनके पीछे भाग-भाग कर, हीरा जन्म गंवायेगा।।

पापों से क्यों रंगता चोली, राम नाम से भर ले झोली।
मुक्ति जिसके बिना असम्भव, कब तक उसे भुलाएगा।।

24

रे मन कर ले प्रभु का ध्यान।
नाम बिन जीवन मरण समान ।।

जन्मों का मैल धुल जाए।
जो तू हरि नाम अपनाए ।।
टूटें जग के झूठे बंधन।
जो हैं सारे दुःख की खान ।।
रे मन······

मोह माया ने दशा बिगाड़ी।
खुद ही दुख का बना पुजारी ।।
दुख का रोग कटेगा कैसे।
जब तक विषयों में गलतान ।।
रे मन······

भटका राही मंज़िल खोए।
पाप कर्म के दुखड़े ढोए ।।
जो चाहे उद्धार जगत से।
कर ले प्राणी हरि गुणगान ।।
रे मन······

25

मैं मुसाफिर चार दिन का, कर लिया पक्का ठिकाना।
भूल बैठा अपनी हस्ती, मर्म तेरा पर न जाना।।

नन्हा-सा मैं इक तिनका हूं, माया पवन उठा ले जाये।
भान्ति-भान्ति के रूप दिखा कर, तरह-तरह के नाच नचाये।।

काम क्रोध को छोड़ न पाया, विषयों से मुख मोड़ न पाया।
लोभ मोह की माला जपकर, जग में फिरता भूल भुलाना।।

उलझ गया माया चक्र में, मैं बेबस पगला दीवाना।
झूठ बोल कर कुफर तोल कर, माल पराया चाहा पाना।।

मन की मैल को धो न सका मैं, तन को अपने खूब सजाया।
बिना दया हरि नाम के कैसे, जग के बन्धन दूर हटाना।।

जिसकी झोली तूने भर दी, कैसे हो सकता वह रीता।
जिस पर रंग चढ़ा है तेरा, लोग कहें उसको दीवाना।।

तज के नाम हरि का प्यारे, गाफिल[1] जग में क्या सोता है।
चरणों में उसके तू खो जा, जो चाहे उद्धार कराना।।

---

1. बेखबर

26

तज के राम नाम का साधन ।
क्यों खोये हीरा-सा जीवन ॥

धन दौलत मद मान जवानी ।
बीती इसमें ही ज़िन्दगानी ॥

बिन तोड़े माया के घेरे ।
कटें न जन्म-जन्म के बन्धन ॥
तज……

जो भी उसकी शरण में आए ।
भूल पाप सब गले लगाए ॥

काहे पगले समझ न पाए ।
तेरे बैरी हैं जग बंधन ॥
तज……

मन दर्पण से मैल न काटी ।
सोने को समझे तू माटी ॥

राम नाम का झाड़ू देकर ।
साफ बना ले मन का आंगन ॥
तज……

छोड़ नाम की अमृत धारा ।
सर पे लादा पाप पिटारा ॥

जग में फिरता मारा-मारा ।
जब से भूला प्यारा साजन ॥
तज……

27

मैं भला बन्दा कहां था काम का।
यह तो चल गया हरि नाम का ।।

सर पे जन्मों पाप को ढोता रहा।
कांटे बोकर आप ही तकदीर को रोता रहा ।।

जागते ही जागते बेखबर हो सोता रहा।
खुल गई तकदीर मेरी पी प्याला नाम का ।।
मैं भला......

मैं सदा ढोता रहा खुद सर पे अपने पाप को।
मैं मिटा पाया न हरगिज़ मायावी अभिशाप को ।।

भूल कर प्रभु नाम, पूजा मैंने अपने आपको।
धुल गई मन मैल सारी ले सहारा राम का ।।
मैं भला......

पाप के छींटों से छलनी हो गया दामन मेरा।
दो घड़ी भी हे प्रभु न कर सका सुमरिन तेरा ।।

कैसे होता ज्ञान बिन रोशन भला फिर मन मेरा।
हो गया हरि नाम से अवसान मेरी शाम का ।।
मैं भला......

28

सीखा नहीं है मैंने तेरे दर से उठ के जाना ।
किसी और दर के आगे इस शीश को झुकाना ।।

जपते हैं नाम तेरा सुख में हज़ारों बन्दे ।
रोते हैं दुख में सारे मिलता नहीं ठिकाना ।।

पापों से लद रही है जीवन की मेरी नैया ।
होगा तेरे सहारे बिन पार कैसे जाना ।।

खुदी का बन पुजारी, भटका मैं हर जन्म में ।
परदा उठा अहम् का, खुद मिल गया ठिकाना ।।

जोड़े अनेकों नाते आलम की वस्तुओं से ।
टूटे ये सारे सपने, जब खत्म था फसाना ।।

यूं तो हज़ारों नगमे गाता रहा मैं हरदम ।
राहत मिली तभी जो गाया तेरा तराना ।।

किस्मत से पी लिया है तेरे नाम का प्याला ।
फीका लगे है आलम, पा नाम का खज़ाना ।।

29

न कुछ तेरा न कुछ मेरा।
यह दुनिया है रैन बसेरा ॥

खोया खेल-कूद में बचपन।
विषयों में बीता सारा यौवन ॥
राम नाम की माला जप ले।
दर-दर तू भटका बहुतेरा ॥
न कुछ तेरा……

एक रोज़ है सबको जाना।
अल्प काल है यहां ठिकाना ॥
जोड़-जोड़ क्या भरे तिजोरी।
कुछ भी साथ न देगा तेरा ॥
न कुछ तेरा……

माया भ्रम में है क्यों डूबा।
न कोई अपना, न कोई दूजा ॥
ईश्वर बसता है कण-कण में।
कर तू मन से दूर अंधेरा ॥
न कुछ तेरा…

जीवन एक पवन का झोंका।
नहीं भरोसा इक पल इसका ॥

उड़ जायें कब प्राण पखेरू ।
मिट जाये कब सपन सुनहरा ।।
न कुछ तेरा……

राम नाम सब कष्ट निवारे ।
बिगड़े तेरे काज संवारे ।।
जप ले नाम हरि का प्राणी ।
भव सागर से पार हो बेड़ा ।।
न कुछ तेरा……

काल खड़ा है सर पे तेरे ।
रटता फिर भी मेरे तेरे ।।
माया बंधन में क्यों फंसता ।
तोड़ दीवाने उसका घेरा ।।
न कुछ तेरा……

30

दुनिया तो मुसाफिरखाना है।
यहां आना है और जाना है।।

रिश्ते बन-बन टूटते जायें।
स्वप्नों की नाईं बिखरते जायें।।
जग में हम किसको अपनायें।
यहां सब कोई बेगाना है।।
दुनिया……

जो कल तक था वह आज नहीं।
आज भी कल का साज नहीं।।
क्यों माया मोह का दीवाना है।
यह दो दिन का अफसाना है।।
दुनिया……

राजा और रंक फकीर गये।
मुल्ला पंडित और पीर गये।।
सब धीर वीर रणधीर गये।
दो दिन का आबो-दाना है।।
दुनिया……

क्यूं हीरा जन्म गंवाता है।
दुखड़ों में जान फंसाता है।।
यों जीवन बीता जाता है।
क्यों जग संग भूल भुलाना है।।
दुनिया……

31

हरि नाम के सहारे।
लग जायेगा किनारे।।
मझधार में है नैया।
कैसे लगे किनारे।।......

माया तो इक भंवर है।
पगले क्यों बेखबर है।।
माया को छोड़ पगले।
लौ नाम की जगा रे।।......

धारा समय की बहती।
पल-पल उमर गुज़रती।।
हीरा जन्म मिला है।
तू गीत हरि के गा रे।।......

32

उठ नाम जपन की बेला है।
हरि नाम जपन की बेला है।।

क्यों चादर तान के सोया है।
सपनों के जग में खोया है।।
जिस हरि नाम को ध्याया है।
तिस मन का मैला धोया है।।
उठ नाम……

बिन नाम तेरा कल्याण नहीं।
क्यों करता उसका ध्यान नहीं।।
वह कण-कण में तुझे ज्ञान नहीं।
क्यों उसकी तुझे पहचान नहीं।।
उठ नाम……

उठो इस आलस को त्यागो।
माया की निद्रा से जागो।।
संसार के पापों से भागो।
कुछ होश करो उठो जागो।।
यह दुनिया झूठा मेला है।
उठ नाम……

33

खोल के मन मंदिर का द्वार ।
कर ले राम नाम व्यापार ।।

क्या जाने, कब राम बुला ले ।
अवसर है प्रभु के गुण गा ले ।।
मन मन्दिर में उसे बसा ले ।
हो जायेगा बेड़ा पार ।।
खोल……

नाम बिना मुक्ति न होए ।
माया मन का मैल न धोये ।।
हीरा जन्म यूं ही खोये ।
कर ले राम नाम आधार ।।
खोल……

पकड़ ले दामन उस स्वामी का ।
घट-घट के अन्तरयामी का ।।
प्रेम जगा ले उसी प्रेमी का ।
होगा भवसागर से पार ।।
खोल……

34

दुखड़े धोये नाम का मंत्र।
जप ले प्राणी राम निरन्तर॥

नाम से भर ले अपनी झोली।
काहे बोले पाप की बोली॥
उठ न जाये तेरी डोली।
उसे बसा ले मन के अन्दर॥......
धन दौलत तुझको ललचाये।
मन भटकन भला कैसे जाये॥
पगले चैन कहां से पाये।
तजकर राम नाम का जंत्र॥......
उस दर क्या कुछ नहीं पाया।
मान जवानी धन और काया॥
फिर भी लब पे नाम न आया।
मन बुद्धि न हुई स्वतंत्र॥......

35

राम नाम के बनो पुजारी ।
हरि का नाम बड़ा हितकारी ।।

क्यों माया का दीप जलाया ।
झूठा सपना है यह काया ।।
धन दौलत इक ढलता साया ।
साथ न देगी माया नारी ।।······

मन मंदिर के दर को खोलो ।
विषयों में जीवन न तोलो ।।
राम नाम तुम मुख से बोलो ।
नर देही हो सफल तुम्हारी ।।······

जाम नाम का पीना सीखो ।
राम भरोसे जीना सीखो ।।
अहम् मिटाना कीना सीखो ।
यही राज़ होगा गुणकारी ।।······

36

तेरे दिन बीते जायें···

कब पकड़ेगा नाम की माला।

मुख पे राम नाम मतवाला ।।

सिमरे हरि नाम जो पगले।

दुख न कभी सताये ।।······

छेड़ नाम की अमर कहानी।

माया में क्यों भूल भुलानी ।।

कब तक तू खायेगा धोखा।

सब नाते मिट जायें ।।······

लालच ने पागल कर डाला।

छूटा राम नाम का प्याला ।।

सुख और चैन की होये वर्षा।

जो भी उसे ध्याये ।।······

37

प्याले में डाल मेरे हरि नाम का मैखाना ।
दर के तेरे सिवाय, मेरा कहां ठिकाना ॥

उलझा हूं मैं युगों से माया के चक्करों में ।
बिन नाम के सहारे, कैसे हो पार जाना ॥

हरि नाम की खुमारी, चढ़ जाये मुझको ऐसी ।
मैं भूलूं अपनी हस्ती भूलूं सभी ज़माना ॥

तन मन सभी हो उसका, कुछ भी नहीं हो मेरा ।
मस्ती में खो के उसकी, हो जाऊं मैं दीवाना ॥

आवागमन न छूटा, छूटी न मोह माया ।
प्यासा जन्म जन्म का, भर दे मेरा पैमाना ॥

38

उड़ जायेगा पंछी अकेला।
संग न जायेगा इक धेला।।

जोड़-जोड़ क्या ढेर लगाये।
धन के बदले पाप कमाये।।
राम नाम का जाम थाम ले।
बीती जाये अमृत बेला।।
उड़ जायेगा······

बेटा बेटी साथ देंगे।
संगी साथी यहीं रहेंगे।।
दुख सुख में ही वही सहारा।
जग जीवन है एक झमेला।।
उड़ जायेगा······

नाम की सरिता पावन गंगा।
धो ले मैला पापी मन का।।
क्यों बीती पे नीर बहाये।
तज पगले सपनों का मेला।।
उड़ जाये······

कोई तेरे साथ न जाए।
तेरे अपने और पराए।।
अन्त समय सब छुट जायेंगे।
कौन गुरु और किसका चेला।।
उड़ जायेगा······

39

तेरी बन्दगी में आ के, मुझे क्या नहीं मिला है।
जन्म के फंद छूटे, मन मैल सब धुला है॥
तुमने मुझे अता की बखशिश हज़ार अपनी।
पर मांगना न छूटा, गो दम निकल चला है॥
मीनार-ए-रौशनी बन, कर मेरी रहनुमाई।
जीवन जहाज़ मेरा, तूफान से घिरा है॥
परवाज़[1] ज़िन्दगी की, महदूर[2] थी यहीं तक।
कभी इस जहां में आया, कभी आ के उड़ चला है॥
कासा[3] गदाई छूटा, बरसा जो अवर[4] ए रहमत।
तेरे नाम का खज़ाना, तब से मुझे मिला है॥
अंबार[5] हसरतों का, अफसाना ज़िन्दगी का।
रहमत से तेरी मुझ पर अब राज़ सब खुला है॥
रहबर की ज़िन्दगी में, था पाप का बसेरा।
नफरत हुई गुनाह से, जब तेरा दर मिला है॥

---

1. उड़ान 2. सीमित 3. मांगने का बर्तन
4. बादल 5. ढेर

40

1. मोहसिन[1] से अपने कब तक आंखें चुरा सकोगे।
आलम में अपने खोकर ना उसको पा सकोगे ।।

2. जब तक खुदी का आलम मिट पाया न तुम्हारा।
सोये नसीब अपने कैसे जगा सकोगे ।।

3. की न कभी इबादत पूछा न हाले बेकस।
जलवा मेरे खुदा का फिर कैसे पा सकोगे ।।

4. हुस्न जवानी धन और शोभा सारे ढलते साये।
इनका सहारा लेकर हरगिज़ मुक्ति न पा सकोगे ।।

5. खरमस्तियों में खो दी अनमोल ज़िन्दगानी।
अब कैसे उस खुदा को तुम मुंह दिखा सकोगे ।।

6. इक दिन वजूद[2] तेरा मिट जायेगा जहां से।
तुम उसकी शां के नगमे फिर कैसे गा सकोगे ।।

7. सब कुछ यहां है फानी मोहसिन तेरा लासानी।
नज़रे मेहर से उसकी जन्नत को पा सकोगे ।।

---

1. एहसान करने वाला (ईश्वर) 2. अस्तित्व

41

बहती है नाम की मै, दो घूंट तू भी पी ले,
हरि नाम के सहारे, इस ज़िन्दगी को जी ले।

जिसको गले लगाये, कुछ भी नहीं है तेरा,
तम से भरा है जीवन, कर नाम से सवेरा,
परछाइँ झूठी तज के, मन राम की छवि ले।
बहती है……

टूटे हुए सफीने, कैसे किनारा देंगे,
माया के कच्चे सूत्र, कब तक सहारा देंगे,
पक्का है नाम धागा, दामन को अपने सी ले।
बहती है……

हरि नाम लुट रहा है, झोली तेरी क्यों खाली,
हरि नाम से भटक कर, दर-दर बना सवाली,
माया के हीरे तज के, हरि नाम की मणि ले।
बहती है……

42

राम नाम को भज दीवाने।
छोड़ दे दुनिया के अफसाने॥

जीवन तो है ढलती छाया।
काहे इससे प्यार बढ़ाया॥
टूटे जब यह स्वप्न सुनहरा।
साथी भी बन जायें बेगाने॥
राम......

झूठे सुख की राह अपनाई।
राम नाम नगरी ठुकराई॥
परमानन्द को पा न सकेगा।
छोड़ के राम नाम पैमाने॥
राम......

अपने गीत तू हरदम गाये।
लब पे उसका नाम न लाये॥
बुझ जाये सब अहम् की ज्वाला।
गर तू अपने को पहचाने॥
राम......

43

वर दो दाता तुझको ध्याऊं,
सदा ही तेरे नगमे गाऊं।

शुरू प्रातः हो नाम से तेरे,
खत्म सांझ हो नाम से तेरे,
तेरे ही मैं स्वप्न सजाऊं,
वर दो दाता……

बुरा सुनूं न, बुरा न देखूं,
बुरा कहूं न, बुरा न सोचूं,
तजूं बुराई मुक्ति पाऊं,
वर दो दाता……

तुम्हें भजें, पापी तर जाते,
जग बंधन से मुक्ति पाते,
मन में अपने तुझे बसाऊं,
वर दो दाता……

44

मत मूर्ख बन रे इन्सान।
अहम् में भूल गया भगवान॥

दया का नाम न आता है।
पाप को गले लगाता है॥
हरि से जिया चुराता है।
बिना नाम नहीं कल्याण॥
मत मूर्ख......

उसी ने अंग दिये सारे।
राग और रंग दिये सारे॥
नाम ही सुख की खान।
कुछ तो कर ले उसका ध्यान॥
मत मूर्ख......

अपनी औकात न पहचानी।
उसकी जात भी नहीं जानी॥
करेगा कब तक तू मनमानी।
दो दिन की तेरी उड़ान॥
मत मूर्ख......

45

क्यों न प्रभु से प्रीत लगाई।
जग की झूठी है परछाईं ।।

खाना पीना झपटी छीना।
पशु-सा है तेरा यह जीना ।।
मानव जीवन है अनमोल।
पाप कमाये छोड़ भलाई ।।
क्यों……

अपने आप बना तू छलिया।
पाप कपट के नरकों जलिया ।।
तज के सच्चा साजन साथी।
माया ठगनी है अपनाई ।।
क्यों……

मरण जन्म का मिटा न घेरा।
युगों पुकारा तेरा मेरा ।।
नाम उजाला माया तम है।
नाम की क्यों न जोत जलाई ।।
क्यों……

46

बन्दे तू भज हरि का नाम ।
मिटे क्रोध मोह और काम ।।

माया का तू रूप न जाना ।
हरि रंग से रहा अनजाना ।।
चार दिनों का तेरा ठिकाना ।
क्यों भूला अपना अंजाम ।।
बन्दे तू······ ······

वह ही सारे जग का माली ।
विपदा में करता रखवाली ।।
शबनम फूल कली और डाली ।
सब पे अंकित उसका नाम ।।
बन्दे तू······ ······

माया मन का मैल बढ़ाये ।
हरिचरणों से दूर ले जाये ।।
काहे पगले समझ न पाये ।
नाम से भर ले मन का जाम ।।
बन्दे तू······ ······

47

मन हंसा चुग नाम के मोती।
बिन नाम कभी गति न होती ।।

चलेगा कब तक पाप सहारे।
नैया डूबे बीच मझधारे ।।
अभी समा है नाम ध्यारे।
तिमिर हटा कर जगा ले ज्योति ।।
मन हंसा······

माया पाछे न बन सौदाई।
चमक दमक दो दिन के भाई ।।
ढलते साये मान बड़ाई।
नाम रंग मन मैली धोती ।।
मन हंसा······

बुने आप ही ताने बाने।
माया व्यूह खुद किये ठिकाने ।।
नाम की महिमा तनिक न जाने।
माया भंवर में दुनिया रोती ।।
मन हंसा······

48

राम नाम क्यों भजता नाहीं।
नाम बिना दुख कटता नाहीं ।।

माया पलने तू जन्मों पलिया।
पाप अग्नि में पल-पल जलिया ।।
राग द्वेष तजे बिना सजनवा।
सच्चा साहिब मिलता नाहीं ।।
राम नाम······

बाली उमरिया बीत न जाये।
बीता क्षण कोई मुड़ न पाये ।।
सिमरले दो पल नाम सज्जनवा।
क्यों सच्चा सौदा जचता नाहीं ।।
राम नाम······

महल दो महले लुट जाते हैं।
संगी साथी छुट जाते हैं ।।
काल दबोचे सबको सजना।
क्यों बंधन को तजता नाहीं ।।
राम नाम······

माया का बेकार सहारा।
कैसे मिलेगा तुम्हें किनारा ।।
माया मोहिनी मकड़ी जाला।
क्यों फन्दे से बचता नाहीं ।।
राम नाम······

49

झूठा जग का सपन सुहाना।
पगले इसमें मत खो जाना।।

हुस्न जवानी मन भरमाये।
धन दौलत पथ से भटकाये।।
ताकत का तो नशा बुरा है।
झूठी शान पे क्या इतराना।।
झूठा जग……

सब पे काल की छाप लगी है।
उसकी सब बारात सजी है।।
महमां हैं दो पल के हम सब।
अपने आपको भूल न जाना।।
झूठा जग……

मौत की क्यों पूजा करता है।
दुख से क्यों दामन भरता है।।
तजके पगले मौत के साये।
परमेश्वर से ध्यान लगाना।।
झूठा जग……

□□